पुरूषार्थी

करो मत तुम भ्रमित मुझको, अभी पुरूषार्थ करने दो ।
अभी ऊर्जश्विता जीवन्तता है, सार्थ करने दो।
अभी उतरा सुसज्जित मैं, अरे जीवन विषम रण में ।
परम सक्षम अभी मैं, विषम बाधा के निवारण में।। 1 ।।

न मैं मृग हूँ, न ही तृष्णा, कभी मुझको व्यथित करती ।
न मरू है यह सकल जीवन, वितत हरिताम्बरा धरती ।
विरस वैराग्य उनको दो, जिन्हें जीवन लगे भारी ।
अक्रियता धार जो सकते, वही उपदेश अधिकारी।। 2 ।।

मुझे आभास निज बल का मुझे विश्वास निज मति पर ।
बडी आस्था मुझे पुरूषार्थ कर्ता की समुन्नति पर ।
करूँगा स्वप्न सब साकार, निश्चित योजना मम है।
सतत संघर्ष ही, मेरे लिए हे मित्रवर शम है।। 3 ।।

शिखर सर्वोच्च तकता ज्यों यहाँ बस राह मेरी ही।
सकल आरातिगण के हेतु मम पर्याप्त भेरी ही ।
मुझे चाणक्य या भार्गव सदृश नीतिज्ञ हैं भाते ।
नहीं संकोच मुझको वंचना छल छदम अपनाते ।। 4 ।।

सफलता सुन्दरी ने है वरा मुझको, समातुर हो ।
इतरजन देखते वैभव असूया द्वेष कातर हो।
किये निज शीर्ष गर्वोन्नत समुद जयघोष सुनता हूँ।
परम रमणीय भोगों को, यथेच्छा नित्य चुनता हूँ।। 5 ।।

पाया जान निज विश्राम मैने है कहॉ खोया ।
महाधन विस्तरों पर भी कभी क्या नींद भर सोया ।
त्वरा क्यों मुक्त है करती नहीं इस देह को मन को ।
न उतना सुख उदित होता विपुल भी देखकर धन को।। 6 ।।

कहीं कुछ रिक्त है पर है सदा अज्ञेय ही मुझको ।
कहॉ पुरूषार्थ हो ! संतत रहे श्रदधेय जो मुझको।
नहीं क्या गति तुम्हारी है, तमाव्रत शून्य में नभ में ।
कहीं से ढूढ लाओ, भर सके जो रिक्ति को क्षण में ।। 7 ।।

दिनांक 23;02;2015

शिव कुमार मिश्र
अपर महाप्रबंधक/प्रशासन